संत मावजी का सामाजिक एवं राजनीतिक दर्शन

*डॉ. दिनेश चन्द शर्मा

साहित्य और समाज का सम्बन्ध अत्योन्याश्रित है। साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। इसी को थोड़ा और विस्तार दें तो साहित्य समाज का गत्यात्मक दर्पण है। समाज को सदेह इकाई मान ले तो साहित्य उसकी वाणी है। साहित्य की विषय–वस्तु युगीन परिस्थितियों और परिवेश से ही अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम और साधन लिए होती है। इसी परम्परा का अनुसरण वागड़ प्रदेश के कृष्ण भक्त मावजी की रचनाओं एवं वाणियों में लक्षित है। इनकी रचनाओं का अन्वेषक दृष्टि से विचारपूर्ण अध्ययन करने पर भक्ति के साथ–साथ युग चेतना और सामाजिक जकड़बन्दियों के खिलाफ समृद्व परम्परा उपलब्ध होती है।

मावजी का जन्म वर्तमान डूंगरपुर जिले की आसपुर तहसील के साबलाग्राम में हुआ था। इनकी प्रामाणिक जन्मतिथि सवंत 1771 माघ शुक्ला 5 बुधवार थी। साम सागर में मावजी के माता पिता का नाम क्रमशः केसर बाई एवं दालम ऋषि वर्णित है। इनके पिता अशिक्षित थे किन्तु साधारण खेती एवं ब्राह्मण वृति से आजीविका चलाते थे। उनका परिवार औदीच ब्राह्मण जाति का था, अतः पारिवारिक संस्कार धार्मिक होना स्वाभाविक था। मावजी के संस्कार बाद में जाकर उसी प्रकार के बन और उन्होंने भगवान निष्कंलक की पूजा करना प्रारम्भ कर दिया।

मावजी का बचपन बड़ी ही कठिनाई से व्यतीत हुआ। उस काल में कुछ अक्षर ज्ञान हो जाने के बाद ब्राह्मणों के बालकों को शास्त्रों का ज्ञान दिया जाता था। मावजी को यह सब बातें निरर्थक लगी और उनका मन पढ़ने में नहीं लगाते। पढ़ाई में अरूचि देखकर माता–पिता ने मावजी को अपने खेतों की रखवाली करने एवं गाये चराने का काम सौंप दिया। मावजी यहाँ पर भी रूखाई दिखाते और स्वयं कृष्ण का रूप धारण करके भजन गाते, नाचते और एक पागल की तरह से बातें करने लगते। बाद में इन्हीं बातों का प्रभाव उनकी रचनाओं में दृष्टिगत हुआ।

मावजी ने नदियों से घिरे वेणेश्वर टापू को अपनी साधना के लिए सर्वाधिक उपयुक्त पाया और साबला से विक्रम संवत 1784 में माघ शुक्ल एकादशी को वेण वृन्दावन धाम (वेणेश्वर) के लिए विहार किया ओर वहीं रहकर तप करते हुए विभिन्न रचनाएँ की, जो राजस्थानी साहित्य की दुर्लभ विरासत है। इनका देहावसान संवत 1801 में हुआ।

मावजी मात्र साक्षर ही थे, किन्तु योग बल और ज्ञान प्रकाश से उन्होंने पद रचनाएँ की। उनके द्वारा 5 चौपड़ें, कई लघु ग्रन्थ एवं गुटके लिखे गये। इनमें वागड़ की गौरव गाथा के साथ ही आधुनिक जीवन की नई तकनीक व सामाजिक व्यवस्था पर कई भविष्यवाणियाँ भी की गई है। मावजी के पाँच चोपड़ों में से चार इस समय सुरक्षित हैं इनमें मेघसागर डूंगरपुर जिले में सावला के हरि मंदिर में है, जिसमें गीता ज्ञान उपदेश, भौगोलिक परिवर्तनों की भविष्यवाणियाँ हैं दूसरा साम सागर शेषपुर में है, जिसमें शेषपुर एवं धोलागढ़ तथा दिव्य वाणियाँ है, तीसरा प्रेमसागर डूंगरपुर जिले के ही पुंजपुर में है, जिसमें धर्मोपदेश, भूगोल, इतिहास व भावी घटनाओं की प्रतीकात्मक जानकारी है। चौथा चौपड़ा रतनसागर, बांसवाड़ा शहर के तिनपोलिया रोड स्थित विश्वकर्मा मंदिर में

सुरक्षित है। इसमें रंगीन चित्र रामलीला, कृष्णलीलाओं का मनोहारी वर्णन सजीव हो उठा है। मावजी का पांचवा चौपड़ा अनन्त सागर मराठा आक्रमण के समय बाजीराव पेशवा द्वारा ले जाया गया, जिसे बाद में अंग्रेज ले गए।

चौपड़ो ंके अलावा इनके द्वारा रचित ग्रन्थों में आगल वाणियाँ, भूगोल पुराण, कालंगा हरण, ज्ञान रत्नमाला, षट कमल, सुरानंद वाणी प्रमुख है। साथ ही इन्होंने विभिन्न आरतीयाँ, सलोखा, स्त्रोंत, पद इत्यादि की रचना की है। इन सभी रचनाओं में इनका सामाजिक दर्शन निहित है तथा उस समय की सामाजिक जकड़बन्दियां एवं उनके खिलाफ इनके प्रयास उल्लेखित है।

मावजी ने उच्च कुलोत्पन्न होने पर भी जाति बंधन एवं ब्राह्मणवाद पर करारी चोट की है। उनके अनुसार सम्पूर्ण मानव समाज एक है। जाति स्त्री पुरूष दो है। मनुष्य चाण्डाल के कार्य करे और वह ब्राह्मण जाति से है तो वह ब्राह्मण नहीं है। भगवान किसी जाति विशेष से प्रेम नहीं करता वह उसी से प्रेम करता है जो उससे प्रेम करता है और सृकृत करता है।

संडाल कर्म सोडी करी, प्रभु भगती ध्यावों

ने से धरे नीज सामसु, भोगती फल पावों ।।3।।

ओत्तम, मध्यम हरि के नहीं, बड़ा हर क्यु जाने ।।4।।

मावजी ने निरूद्व अवस्था की प्राप्ति हेतु ध्यान करने मुर्ति पूजा की थी, किन्तु मुर्ति पूजा के विरोध में उनके विचार है।

वसन टांकी बस जे रहै, सुतो देव जगावे।

टांकीसु टुकड़ा भया सो तो पत्थर कहावे।।1।।

तीर्थाटन–दर्शन आदि का भी विरोध करते हुए मावजी ने कहा है कि सारा संसार मुर्खता के सागर में डूबा हुआ है। पाप करके तीर्थ यात्रा के लिए चल पड़ता है। क्या इससे उसके पाप धूल जावेगें ? आडम्बरों को छोड़ हृदय से ईश्वर स्मरण ही सच्चा मुक्ति का मार्ग है।

एक कंठी सापा किया, दूजा करवा आंगा

कोइक कन फढ़ाविआ कोई के मत जागा।।5।।

कर्मफल के बारे में मावजी का मानना था कि जो जैसा करता है, उसे वैसा ही फल प्राप्त होता हैः–

भष, सोडी, अभष, मनमें नहे दया

साहेब लेषा मांग से, जवाब देसे क्या।।

उस युग में वैदिक काल की पूज्यनीया नारी घर की चारदीवारी में कैदमात्र रह गई थी। मुस्लिम आक्रमण से उत्पन्न असुरक्षा के कारण नई बुराई बाल–विवाह की समस्या प्रकट हो गई थी। मावजी ने नारी उद्वार कि लिये समाज का मार्गदर्शन किया। उनके लिए रास और भक्ति का मार्ग खोला। वेणेश्वर हरमंदिर शिलालेख में मावजी की चार पत्नियों का उल्लेख है। जाति प्रथा का विरोध करने और स्वंय को इसका उदाहरण बनाने के उद्देश्य से ब्राह्मण के अलावा अन्य जाति की कन्याओं से विवाह करना तय किया। नारी उद्वार के दृष्टिकोण को मध्य नजर

रखते हुए विधवा मनुबाई से विवाह किया। उन्होंने पर्दा प्रथा का खण्डन किया है। मावजी ने कन्या विक्रय को घृणा की दृष्टि से देखा और निष्कलंक सम्प्रदाय में लोगों को ऐसा घिनौना कार्य नहीं करने का उपदेश दिया।

मावजी ने कुसंगति बुरी बताई है। बुरा स्वयं भी डूबता है और उसकी संगती करने वाले को भी ले डूबता है।

कुसंगा संग डुबसे, बुडतों बुडाडे।

मावजी ने अपनी वाणी में कहा कि सत्य व्रत हमेशा आचरण में लाना चाहिए।

माटे सत्य जोग भाई आसरणी सालवूं

मावजी की वाणी में समाजवाद की झलक दृष्टिगोचर होती है। उनके अनुसार हर व्यक्ति के पास आवश्यक वस्तु हो तथा मकान अवश्य ही होना चाहिए। उन्होंने आवश्यक समझा कि समाज में आपस में सहयोग की भावना निरन्तर, पुष्पित एवं फलित होती रहे। आपसी सहयोग के बिना समाज की उन्नति कठिन है। आदिवासी वर्ग तभी ऊपर उठ सकता है, जब सभी आपस में सहिष्णुता एवं सहयोग की भावना से काम करें। आज भी भीलों में आपसी सहयोग की भावना फलित हो रही है। वे मकान बनाने, कुआं खोदने व अन्य सुख–दुःख में मिल झुल कर कार्य करते है। मावजी के अनुसा किसी गृहस्थी के लिए यह आवश्यक है कि उसके पास मकान, वस्त, गाय, घोड़ा या ऊँट, भूमि, बैल हो।

मावजी के समय सामंतशाही शासन व्यवस्था विधमान थी, और गरीब एवं पिछड़ी प्रजा का अत्यधिक शोषण हो रहा था। उन्होंने शासक वर्ग को प्रजाहित कार्य करने का उपदेश दिया। उनके अनुसार राजा को हंस न्याय करना चाहिए, अर्थात राजा का निणय सबके हित में होना चाहिए। राजा को रिश्वत नहीं लेनी चाहिए। प्रजा को सुख देना चाहिए। कर न्याय संगत लेना चाहिए। ब्राह्मण, साधु की सेवा करनी चाहिए। कोई नगर भंग नहीं करना चाहिए। ओछे शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

गीता के निष्काम कर्म योग का प्रभाव माव–वाणी में मिलता है। उनके अनुसार 'संसांर मायाजाल है,मनुष्य उस जाल में मकड़ी की तरह फंस जाता है। राग–द्वेष, मेरा तेरा सब व्यर्थ है। वे प्रभु से अनुराग रखने को कहते हैं।' इस माया जाल से मुक्त होना संभव बताते हैंः–

आल पपांल पालाण ऐके ऊपर कर मुओ।

भव–बंध के भ्रम लेयो, कहा सीध हुओ।।4।।

मावजी के काल में शुद्र वर्ग की दशा अत्यन्त शोचनीय थी। अस्वास्थ्यकर और घृणित समझे जाने वाले सेवा कार्यो की लक्ष्मण रेखा ने उनके बौद्धिक और शारीरिक सामर्थ्य को बांध दिया था। ऐसी गम्भीर परिस्थितियों में उन्होंने प्रेम व सहिष्णुता, मानवीय अभिगम, तथा सर्व–धर्म समन्वय की स्थापना करने के लिए निष्कलंक सम्प्रदाय की स्थापना की। उन्होनें हर रूढि, हर आडंबर, हर परम्परागत अनुपयोगी रीति पर निर्भयतापूर्वक निर्मम आघात किया। उन्होनें स्पष्टः घोषित किया कि आचार, अत्याचार होकर नहीं निभेगा।

निष्कलंक सम्प्रदाय में मावजी के उपदेश बांसवाड़ा के सुथारों के मन्दिर के चोपड़े में सुरक्षित है। उनके अनुसार–बड़े लोगों को चाहिए कि वे जनसाधारण की सेवा करें। सत्य बोले, परोपकार करते रहना चाहिए।

माव–वाणी में कहा है– कर्म व उपासना करनी, झूठ नहीं बोलना, अल्पाहारी होना।

कडुवू वाक तजवु एक राज लिसार वु

धन संग्रह नहीं करना। जरूरत से ज्यादा वस्तु का संग्रह नहीं करना। शुद्व आचरण से जीना। तन,मन एंव वाणी से किसी को दुःख देने की चेष्टा नहीं करनी। किसी की पराधीनता स्वीकारनी नहीं। किसी के प्रति ईर्ष्या नहीं करनी। कन्या से शादी के बाद उस पराई लड़की को दुःख नही देना। पत्नि को पति व्रत और पति को पत्निव्रत रहना चाहिए।

मावजी ने आत्मनियंत्रण पर बल दिया है। विधवा या विधुर को स्वयं पर नियत्रंण रखना चाहिए। व्यक्ति को अपना कर्तव्य पालन करना चाहिये। कभी सुस्ती नहीं रखनी चाहिए। जो हमेशा नियम संयम से रहते हैं वे दीर्घायु रहते हैं। समय की गति के अनुसार रहना खान–पान अपने योग्य हो।

मर्यादा का कभी उल्लघंन नहीं करना, चोरी नही करना, मद–मॉंस, अफीम, तम्बाकू एंव अन्य अनेकानेक अभक्ष्य वस्तुओं का सेवन नहीं करना, आपस में लड़ाई झगड़े नहीं करना, जो ऑंखों देखा है वही कहना, बनावटी बात नहीं कहनी। पाखण्ड आडम्बर से दूर रहना, दुसरे के दुःख को समझना, कभी मांग कर नहीं खाना आदि।

वस्तुतः निष्कलंक सम्प्रदाय में एक आदर्शवादी समाज के निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया गया। यहाँ मावजी महात्मा गाँधी के अग्रगामी प्रतीत होते है, जिन्होनें सर्वजन कल्याण का संदेश दिया। इस सम्प्रदाय के माध्यम से मावजी ने भ्रमित समाज का मार्गदर्शन किया। मावजी सम्प्रदाय मे उस समय बुनकर जाति सम्मिलित हो गई । बुनकर जाति ने संस्कृतिकरण प्रक्रिया द्वारा जाति व्यवस्था में उच्च सोपान प्राप्त कर लिया।

मावजी ने अपनी वाणी में आने वाले युगों को लेकर ढेरों भविष्यवाणियाँ की हैं, जो लोकमन को आरम्भ से ही प्रभावित एवं विस्मित करती रही है। उन्होंने साम्राज्यवाद के अंत, प्रजातंत्र की स्थापना, अछूतोद्धार, पाखण्ड और कलियुग के प्रभावों में वृद्वि, परिवेशीय, सामाजिक एवं सांसारिक परिवर्तनों पर स्पष्ट भविष्यवाणियाँ की है, जिन्हें आज साकार हुआ देखा जा सकता है। लगभग तीन सो वर्ष पूर्व जब पानी की कोई कमी नहीं थी तब उन्होंने आज के हालातों को जानकर कहा था–

परिये पाणी वेसाये महाराज

अर्थात तोल (लीटर) के अनुसार पानी बिकेगा। सामन्ती सत्ता के पराभव को उन्होंने दिव्य दृष्टि से देखकर ही कहा था–

'पर्वत गरी ने पाणी थासे'

वस्तुतः मावजी का प्रादुर्भाव वागड प्रदेश के पिछड़ेपन को दूर करने के लिए मानवीय समाज की स्थापना हेतु हुआ था। वास्तविक सत्य को विस्मृत कर पथ भ्रष्ट हुए जनमानस को लम्बी सुषुप्ति से जागृतावस्था में लाकर उचित मार्ग पर अग्रसर होने को प्रेरित करना कोई सरल कार्य नहीं या, किन्तु सत्य की ठोस भूमि पर खड़े होकर मावजी जैसे महापुरूषों ने इसी सत्य शक्ति के बल पर इतने आत्मविश्वासपूर्ण इस कर्त्तव्य का निर्वहन किया कि तत्कालीन समाज तो इन युग चेताओं के सम्मुख नतमस्तक हुआ ही, साथ ही आने वाला प्रत्येक युग उनका ऋणी हो गया। मावजी समाज सुधारक थे जिनकी सामजिक सुधार की चेतना धाराएँ आज भी प्रवाहित होकर नवजीवन का संदेश दे रही है।

*असिस्टेंट प्रोफेसर
इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय
जयपुर (राज.)

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1 अग्रवाल, मथुरा प्रसाद, संत मावजी (भारतीय साहित्य के निर्माता), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2000

2 ओझा, गौरीशंकर हीराचंद, डूंगरपुर राज्य का इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2000

3 माणिक्य लाल वर्मा आदिम जनजाति शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित 'द ट्राईन्स' के विभिन्न संस्करण।

4 संत मावजी की स्वयं की रचनाएँ–चौपड़ा, आगलवाणी इत्यादि।

5 शर्मा, सागरमल, राजस्थान के संत (भाग–2), शेखावाटी शोध प्रतिष्ठान, चिड़ावा झुंझनूं 1998

6 शर्मा, एस.एल., संत मावजी, हिमांशु पब्लिकेशन्स, उदयपुर 1990